इब्राहीम के साथ परमेश्वर की वाचा

ह्युगो मेक्कोर्ड

''वाचा'' शब्द (उत्पत्ति 15:18) मूल शब्द *बाराह* से लिया गया है जिसका अर्थ है ''काटना।'' वाचा एक इकरारनामा अर्थात पक्का समझौता होता है। इब्रानी मुहावरे *करथ बेरिथ* का अक्षरश: अर्थ है ''एक वाचा काटना।'' इस वाक्यांश का सामान्य अनुवाद ''एक वाचा बनाना'' भी होता है।

वंश देने की प्रतिज्ञा

कई वर्ष तक परमेश्वर ने इब्राहीम को वंश देने की बार-बार प्रतिज्ञा की थी (उत्पत्ति 12:7; 13:15)। कई वर्षों बाद, अभी भी नि:संतान इब्राहीम ने कहा कि उसका ''मुख्य सेवक'' ही कानूनी तौर पर उसकी सम्पत्ति का वारिस होगा। परन्तु, परमेश्वर ने बताया कि इब्राहीम का वंश (उत्पत्ति 15:4) उसके अपने शरीर से ही निकलेगा। अन्तत: उसकी संतान सितारों की तरह अनगिनत होनी थी। लाखों इब्रानियों, अर्थात इब्राहीम और उसके अपने पुत्र इसहाक की संतान के पृथ्वी पर रहने की बात परमेश्वर द्वारा अपना वचन निभाने का प्रमाण है। सबसे बड़ा ''वंश'' मसीह था (गलतियों 3:16), जिसके द्वारा न केवल इब्रानी ही बल्कि अन्यजाति भी (प्रकाशितवाक्य 7:4, 9) लाखों-करोड़ों की संख्या में इब्राहीम की संतान बन चुके हैं (उत्पत्ति 3:29)।

देश देने की प्रतिज्ञा

परमेश्वर की वाचा में जो उसने इब्राहीम के साथ ''काटी'' थी, न केवल असंख्य वंशज ही शामिल थे बल्कि उसमें मिसर से अश्शूर तक उनके रहने के लिए भूमि भी प्रदान की गई थी। ऐसा लग सकता है कि प्रतिज्ञा बहुत देर बाद पूरी हुई होगी (देखिए उत्पत्ति 15:13), परन्तु परमेश्वर ने अपने आपको इससे बांध लिया था। चार सौ तीस वर्ष बाद (उत्पत्ति 12:40) इब्राहीम की संतान प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर चल पड़ी। अन्तत:, ''यहोवा ने इस्राएलियों को वह सारा देश दिया, जिसे उसने उनके पूर्वजों से शपथ खाकर देने को कहा था; और वे उसके अधिकारी होकर उसमें बस गए'' (यहोशू 21:43; देखिए 23:14; न्यायियों 2:3; 1 राजा 4:21)। दुख की बात यह है, कि आज कुछ लोग दावा करते

हैं कि परमेश्वर ने अभी अपना वचन पूरा नहीं किया है। प्रिमिलेनियलिस्ट [एक हज़ार वर्ष के राज्य की शिक्षा देने वाले] लोग परमेश्वर को उलझाने का प्रयास करते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण प्रतिज्ञा

उत्पत्ति 15 पूरा ही अध्याय महत्वपूर्ण है, लेकिन इसमें एक आयत विशेष तौर पर महत्वपूर्ण है। रोमियों 4:3, गलतियों 3:6 और याकूब 2:23 में आयत 6 का इस्तेमाल हमें यह समझाने के लिए हुआ है कि हमारा उद्धार कैसे होता है।

जब मूसा ने यह दावा किया कि इब्राहीम ने परमेश्वर पर ''विश्वास किया,'' तो वह अपने मन से नहीं कह रहा था कि परमेश्वर है। इब्राहीम ने परमेश्वर में वाचा दिए जाने से पहले विश्वास किया। (हो सकता है कि उसने अपने पिता का मूर्तिपूजा करने में कभी साथ न दिया हो।) फिर, उसने परमेश्वर की प्रतिज्ञा में विश्वास किया कि उसके अपने ही खून से उसका एक वारिस उत्पन्न होगा। उसके इसी विश्वास के कारण उसे धर्मी कहा गया था।

इब्राहीम का विश्वास मूसा की व्यवस्था के कामों से पूरी तरह अलग था (रोमियों 3:28; 4:2-5; गलतियों 2:16; 3:5)। सीनै पर्वत पर व्यवस्था के काम दिए जाने से बहुत पहले इब्राहीम को अपना प्रतिफल मिल चुका था। आज, मसीह के विषय में परमेश्वर के वचन में मनुष्य का विश्वास (रोमियों 4:23-25) उसे धर्मी ठहराता है, और इब्राहीम के विश्वास की तरह ही इसका भी मूसा की व्यवस्था के कामों से कोई सम्बन्ध नहीं है। यदि कोई इन दोनों को आपस में जोड़ने का प्रयास करता है तो वह मसीह को निष्प्रभावी बनाता है (गलतियों 5:4)।

इब्राहीम का विश्वास केवल विश्वास ही नहीं था। उसके विश्वास की ''लीक'' अर्थात कदम (रोमियों 4:12) बहुत से थे; क्योंकि वह कई देशों से होता हुआ सैकड़ों मील तक चला था। फिर, जिस विश्वास के बारे में हम उत्पत्ति 15:6 में पढ़ते हैं वह वास्तव में इब्राहीम द्वारा अपने इकलौते पुत्र को बलिदान करने के लिए चाकू निकालने तक पूर्ण नहीं हुआ था (याकूब 2:23)। रोमियों और गलतियों की पुस्तकों में वर्णित विश्वास में बेशक व्यवस्था के कामों को बाहर रखा गया है, परन्तु वहां किसी भी तरह से विश्वास की आज्ञाकारिता बाहर नहीं है (रोमियों 1:5; 16:26)। विश्वास से आज्ञा मानने का वर्णन विश्वास के बार-बार उल्लेख करने से नहीं किया जाता है। उदाहरण के लिए, रोमियों 5:1 का विश्वास (1) मन में विश्वास करने कि परमेश्वर है या मसीह उसका पुत्र है, (2) मन फिराने, (3) अंगीकार करने, या (4) बपतिस्मा लेने (देखिए रोमियों 6:3, 4) का उल्लेख नहीं करता है। फिर भी व्यापक ''विश्वास'' जो धर्मी ठहराता है, में चार बातें हैं। गलतियों 3:26 का विश्वास जो हमें परमेश्वर की संतान बनाता है, विशेष रूप से मन फिराने या बपतिस्मे का उल्लेख नहीं करता, परन्तु अगली आयत में स्पष्ट हो जाता है कि विश्वास में बपतिस्मा शामिल है।

मसीह को न पहनने वाला परमेश्वर का बालक नहीं हो सकता था। क्योंकि जब तक कोई बपतिस्मा नहीं ले लेता तब तक वह मसीह को नहीं पहनता, इसलिए विश्वास में,

परमेश्वर की संतान बनाने के लिए, बपतिस्मा आवश्यक है। विश्वास (जो कुछ भी इसमें है उसके साथ) अपने आप में एक काम है (यूहन्ना 6:29), लेकिन यह परमेश्वर का काम है। मनुष्य का अपना कोई भी कर्म (इफिसियों 2:8, 9) उसे उद्धार नहीं दिला सकता।